International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 455-457

हिंदी का प्रवासी साहित्य

संतोष सिंह
हिंदीप्रवक्ता, छाजू राम जाट कालेज, हिसार, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

आदिकाल मे मानव जब फल इकट्ठे करके और शिकार करके पेट भरता था, तब भोजन और सुरक्षित स्थान की तलाश मे इधर उधर भटकता था। जब उसने खेती करना और आग जला कर खाना बनाना सीख लिया, उसके बाद एक घर की ज़रूरत हुई इस तरह एक जगह टिक कर लोग रहने लगे पर जब ज़मीन का उपजाऊपन समाप्त हो गया या वहाँ की जनसंख्या बहुत बढ गई या कोई प्राकृतिक विपदा आ गई तो उन्हे कहीं दूसरी जगह जाकर बसना पड़ा, अपना नया ठिकाना ढूंढना पड़ा। मानव ही क्यों पशु पक्षी भी सही मौसम और भोजन की तलाश मे दूसरे स्थान पर प्रवास करने चले जाते हैं। प्रवास का अर्थ होता है अपने घर से दूर कुछ समय के लियें या हमेशा के लियें चले जाना, कही और जाकर बस जाना। आज के संदर्भ मे प्रवासी शब्द उन लोगों के लिये प्रयुक्त होता है जो अपना देश छोड़कर एक बेहतर ज़िन्दगी की तलाश मे दूसरे देशों मे जा बसे हैं।

प्रवास प्रकृति का नियम है। हमेशा से लोग दूसरे देशों मे जाते रहे हैं, बसते रहे हैं। पहली पीढी प्रवासी ही रहती है, सदियाँ या फिर पीढियाँ निकलने के बाद वह देश पूरी तरह उनका होता है। दूसरे देश की नागरिकता मिलने के बाद भी उन्हे उनके मूल के देश से पहचान मिलती है।[१]

भूमिका

प्रवासी हिंदी साहित्य को लेकर जो मतभेद एक बुलबुले की तरह कुछ समय से उठता रहा है उसको शांत करना । साक्ष्य, तथ्य एवं जगह-जगह के उदाहरणों का सहारा लेकर आलेख का ताना-बाना बुना गया है । भावभूमि को तैयार करने के लिए विषय वस्तु से जुड़े प्रसंगों के बारे में भी संक्षेप में वार्ता की गई है । जिन पाँच बिन्दुओं पर हम अपने आपको केन्द्रित करेंगे उनकी शुरुआत जूलाई 2011 में 'ईकविता-' मकड़जाल से प्रारम्भ हो कर '**हिंदी भारत**' के माध्यम से आगे बढ़ी थी । इसमें विश्व के कई विचारकों के अवदानों की आहुति पड़ी और लगभग सबकी बातें पहले बिन्दु पर ही आधारित थीं कि व्यक्ति प्रवासी होता है उसकी भाषा नहीं अतः क्या प्रवासी रचनाकारों की कृतियों को 'प्रवासी हिंदी साहित्य' के रूप में स्वीकार करना चाहिए ?[२]

हिंदी का प्रवासी साहित्य

विगत कुछ वर्षों से प्रवासी साहित्य तथा साहित्यकारों को केंद्र में रखकर विचार-विमर्श जारी है। परंतु अनेक जन इस संकल्पना से परिचित नहीं हैं । 'प्रवासी' किसे कहा जाता है? प्रवासी साहित्य, प्रवासी भारतीय साहित्य अथवा प्रवासी हिंदी साहित्य किसे कहते हैं? इसका स्वरूप कैसे होता है? इसकी सृजनात्मकता किन में होती है? हम किन्हें प्रवासी साहित्यकार कह सकते हैं? अनेक प्रश्न उभरकर आते हैं? विद्वद्जन सोचते रहे। विचार-विमर्श जारी रहा। पत्र-पत्रिकाएँ निकलती रही और अनेक उतर सामने आते गए। भारतीय मूल के लोग समस्त विश्व में फैले हुए हैं। उन्होंने विदेशों को अपनी कर्मभूमि बनाया है। यह बात नवीन नहीं है। प्रवासी साहित्य भी नवीन नहीं है। परंतु बीसवी शती में प्रवासी भारतीयों ने भारतीयता की अस्मिता को जिंदा रखने की भरसक कोशिश की है। प्रवासी साहित्य जो पहले उपलब्ध था उससे आज का प्रवासी साहित्य एकदम अलग है। इन पैंतीस-चालीस वर्षों में नवीन विद्युत्यिकी के तकनीक विकसित हुए। प्रौद्योगिकी चरम सीमा लांघती गयी तो यह साहित्य भी अधिकाधिक जनप्रिय होता गया। जन-जन तक पहुँचता गया। प्रवासी भारतीय भारत से दूर होते हुए भी इस माध्यम से बहुत सान्निकट होते गए हैं। भारतीय मूल के विदेशों में रहनेवालों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य कहा जाता है और जिन्होंने 'हिंदी' को केंद्र में रखकर या माध्यम बनाकर या हिंदी में लिखा है वे 'प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं तथा यह बहुत समृद्ध ' प्रवासी साहित्य ' है।

प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत कविताएँ, उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, अनूदित साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्मकथा आदि का सृजन हुआ है। प्रवासी साहित्यकारों की संख्या भी श्लाघनीय है। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीति- मूल्य, मिथक, इतिहास, सभ्यता के माध्यम से 'भारतीयता' को सुरक्षित रखा है। 'हिंदी' को प्रवाहित रखा, जिंदा रखा। इन साहित्यकारों में प्रमुख नाम हैं- साहित्यकार हरिशंकर आदेश । उनकी लगभग तीन सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। वे 1966 से 1976 ई. तक वेस्ट इंडिज़ में भारत के उच्चायुक्त के रूप में कार्यरत रहे थे। वेस्ट इंडिज़ में अपने कार्यकाल के दरमियान उन्होंने अवलोकन किया कि चर्च द्वारा वहाँ बसे हुए भारतीयों (जिन्हे वर्षों पहले ब्रिटिश मजदूर बनाकर ले गए थे) पर धर्मांतर के लिए दबाव डाला जा रहा है। महाकवि आदेश ने इस बात को गंभीरता से लिया। उन्होंने इसे रोकने के लिए नामकरण से लेकर मृत्युसंस्कारादि धार्मिक कार्य के लिए वहाँ के निवासियों को प्रशिक्षित किया। आदेश जी के कारण वहाँ के लोगों को राहत मिली। सुरक्षा महसूस हुई। इसलिए उन्हें उनका कार्यकाल खत्म होने के बाद भी किसी ने भारत लौटने नहीं दिया। लगभग 50 वर्ष हो गए वे वहीं के होकर रहे हैं। उन्होंने वेस्ट इंडिज़ में 'भारतीय विद्या संस्थान' की स्थापना की है। इस संस्था द्वारा उन्होंने बी.ए. स्तर के हिंदी पाठ्यक्रम सीखने का प्रावधान किया है। इतना ही नहीं तो 'भारतीय आभिजात्य संगीत' का

पाठ्यक्रम भी शुरू रखा है। उन्होंने भारत और हिंदी संबंधी गीत लिखे हैं। उन गीतों तथा रागों का अध्यापन वे स्वयं करते रहे हैं । उनकी हिंदी की तीन सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं । उनमें महाकाव्य, खंडकाव्य, भगवतगीता का हिंदी और अंग्रेजी पद्यानुवाद, तीस नाटक, एकांकी, जीवनियाँ आदि हैं। संगीत और साहित्य के माध्यम से उन्होंने 'भारतीयता' को जिंदा रखा है। 'हिंदी' के प्रचार-प्रसार में प्रवासी भारतीय साहित्यकार हरिशंकर आदेश का नाम अग्रणी हैं । वे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं-जैसे विश्व कवि , महाकवि आदि अनेक । उनमें भारत सरकार का 'प्रवासी भारतीय साहित्यकार' सम्मान प्रमुख है।

प्रवासी हिंदी साहित्यकार ब्रिटन, अमेरिका, कॅनडा, गुयाना, मॉरिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद (वेस्ट इंडिज़) आदि स्थानों को अपनी कार्यभूमि स्वीकार कर साहित्य सृजन करते आए हैं। भारत सरकार के सांस्कृतिक संबंध की पत्रिका 'गगनांचल', अलीगढ़ से निकलनेवाली वर्तमान साहित्य (संपादक. प्रो.के.पी.सिंह और नमिता सिंह) ने 'प्रवासी साहित्य' महाविशेषांक (दो भाग) प्रकाशित किए हैं। कुछ स्तरीय हिंदी पत्रिकाओं ने भी 'प्रवासी साहित्य ' पर विशेष लेख प्रकाशित किए हैं। आज इस विषय को केंद्र में रखकर संगोष्ठियाँ, विचार-विमर्श, अनुसंधान प्रारंभ हो चुका है। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी विभाग में 'प्रवासी साहित्य तथा साहित्यकारों' पर अनुसंधान संपन्न हुआ है। कुछ छात्र कार्यरत हैं। विशेष बात यह कि एक शोधछात्र तो विदेशी हैं । (श्रीलंका के सबरगमुवा विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक हैं और वह विख्यात प्रवासी साहित्यकार हरिशंकर आदेश के साहित्य पर अनुसंधान मेरे निर्देशन में कर रहे हैं।) इस विश्वविद्यालय में यह पहली बार संपन्न हो रहा है।

प्रवासी हिंदी साहित्यकार अलका शर्मा वॉइस ऑफ अमेरिका मैँ कुछ समय कार्यरत रही थी । बाद मैँ लंदन मैँ बी.बी.सी.की हिन्दी सेवा की अध्यक्ष हैं। इनके लेखन मैँ भारतीय समाज की संवेदना की अभिव्यंजना दिखाई देती है। अर्चना पैन्यूली डेन्मार्क मैँ रहती हैं। इनकी रचनाएँ पत्र –पत्रिकाओं मैँ प्रकाशित हुई हैं । ये अच्छी अनुवादक भी हैं। अनिलकुमार प्रभा अमेरिका मैँ रहती हैं। वॉइस ऑफ अमेरिका मैँ संवाददाता के रूप मैँ कार्यरत रही हैं। न्यू जर्सी मैँ हिन्दी भाषा और साहित्य की प्राध्यापिका हैं। इनके लेखन मैँ स्त्री की महत्वाकांक्षा तथा उसकी त्रासदी अंकित हुई है । इला प्रसाद प्रौद्योगिकी से जुड़ी हैं । उनके लेखादि वैज्ञानिक शोध पत्रिकाओं मैँ प्रकाशित हुये हैं। इन्होंने इला नरेन नाम से रचनाएँ की हैं । इनके कहानी संग्रह ,कविता संग्रह प्रकाशित हुये हैं। उमेश अग्निहोत्री अमेरिका में रहते हैं। उनके दो टेलि नाटक, मंच नाटक प्रकाशित हुए हैं। 1996 ई. से. वे वॉशिंग्टन महानगर के टेलिविजन प्रोग्राम के लिए 'अमेरिका में भाषाओं के सांस्कृतिक अनुभव' विषय पर एक प्राक्षिक प्रकरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इनकी कहानियाँ अनुभवों की प्रस्तुति हैं। वे पाठकों के साथ संवाद स्थापित करती हैं । उषाराजे सक्सेना विख्यात प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं । इंग्लेंड को कर्मभूमि बनाकर प्रवासी हिंदी साहित्यकारों में इन्होंने काफी सक्रियता रखी है। इनके साहित्य में भारत, भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भाषा के प्रति के हर तरह के अनुभव तथा विचार प्रकट होते दिखाई देते हैं। अनेक विदेशी पत्र-पत्रिकाओं मे ये छपती रही हैं । इनके दो कविता संग्रह, एक कहानी संकलन, कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं । संप्रति वे ब्रिटन की 'पुरवाई ' नामक पत्रिका की संपादक हैं । इनके लेखन में आशा की संभावना नजर आती हैं। इन्होंने अपने समय तथा समाज की विडम्बना और सत्य को अपने लेखन में अभिव्यंजित करने की कोशिश की है। उषा वर्मा यॉर्क विश्वविद्यालय में अनेक वर्षों से हिंदी पढ़ाती हैं। इनके कविता संग्रह, कहानी संग्रह, अनुवाद प्रकाशित हुए हैं । भारतीय तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में ये काफी लिखती रही हैं । समीक्षकों का मत रहा है कि इनकी कहानियों द्वारा संवेदना, सामाजिक – सांस्कृतिक सरोकार व्यक्त होता रहा है। अधिकतर पश्चिमी समाज की विसंगति इनके लेखन द्वारा अभिव्यक्त हुई है।

प्रवासी हिंदी साहित्य ने अपनी एक अलग पहचान बनाए रखी है। हिंदी शब्दकोशों में 'प्रवासी' का अर्थ प्राप्त होता है- विदेशों में रहनेवाले भारतीय। परंतु अन्य भाषाओं में इस शब्द का अर्थ अलग है तथा प्रयोग भी।

कुछ विद्वानों के मतानुसार हिंदी में इसका बहुत संकुचित अर्थ लिया जाता है। व्यापक अर्थ में जो लेखन अपने घर से दूर हुआ हों यानी विदेश में या अपने घर से दूर वह प्रवासी साहित्य है।

डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी लंदन में भारतीय उच्चायुक्त रह चुके हैं। उनके वहाँ के कार्यकाल में हिंदी भाषा और साहित्यिक सृजन में काफी परिवर्तन हुआ । 2000 ई. से वहाँ 'हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता' के माध्यम से हिंदी के प्रति सजगता हुई है। अमरदीप , पुरवाई पत्रिकाओं द्वारा हिंदी साहित्यकारों की साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं । उषा वर्मा लंदन के 'यॉर्क' में रहती हैं । उनके कविता संग्रह, चार कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं । साथ ही भारतीय तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में अनेक रचनाएँ छपी हैं। जेनेन्द्र शर्मा अंग्रेजी में एम. ए.कर चुके हैं । लंदन में ड्राइव्हर के पद पर कार्यरत हैं। वे अनेक सम्मानों से पुरस्कृत हैं । हिंदी धारावाहिक लेखक, कहानीकार, कवि के रूप में ख्यात हैं। उनके लेखन में लंदन में बसे हुए भारतीयों की पीड़ा का अंकन हुआ दिखाई देता है। उनकी 'टेम्स का पानी', 'मेरे पासपोर्ट का रंग' कविताएँ बहुत चर्चित रही हैं। कृष्ण बिहारी अबू धाबी में वरिष्ठ हिंदी अध्यापक हैं। इन्होंने अनेक एकांकी नाटक लिखे हैं। साथ ही निर्देशन भी किया है। उनके तीन उपन्यास और तीन गीत संकलन प्रकाशित हुए हैं। उनकी कुछ कहानियों का मंचन भी हुआ है। साथ ही कुछ कहानियों के उर्दू, नेपाली, पंजाबी में अनुवाद भी हुए हैं। स्पष्ट है कि प्रवासी साहित्य अत्यंत संपन्न है। प्रवासी साहित्यकार भी अपनी अलग पहचान बनाकर सृजनरत हैं। हम इनके साहित्य को पढ़कर विदेशों के अनेक अनुभवों, भावनाओं, संवेदनाओं से जुड़ सकते हैं। यह बात भी स्पष्ट होती जाती है कि मानवीय संवेदनाओं को देश-काल की मर्यादाएँ नहीं होती।

निष्कर्ष

आज स्थिति यह है कि माॅरिशस, अमेरिका एवं इंग्लैड तीन ऐसे प्रमुख देश है जहाँ प्रवासी भारतीयों की संख्या सर्वाधिक है और सम्भवतः इस कारण इन देशों में हिंदी लेखकों की संख्या भी सबसे अधिक है। इन प्रवासी लेखकों में अनेक ऐसे लेखक हैं जिनकी भारतीय ही नहीं वैश्विक हिंदी मंच पर प्रतिष्ठा है और जिनके पाठकों की संख्या किसी भी लोकप्रिय हिंदी लेखक से कम नहीं हैं।

प्रवासी साहित्य लेखन की यह परम्परा दीर्घकाल तक यथावत बनी रहें। ताकि आने वाले समय की नई भारतीय पीढ़ी को प्रवास से संदर्भित

सारी जानकारी सहज ही मिलती रहें। प्रवासी लेखक, अपने लेखन की परम्परा को इसी प्रकार निभाते रहे, और भारतवंशी होने के गर्व को सदा अपनी लेखनी से उद्भासित करते रहे, तभी अपने प्रवासी साहित्यकार के रूप को सहज परिभाषित कर सकेंगे।

संदर्भ

१. http://www.swargvibha.in/aalekh/all_aalekh/prawas_bbhatnagar.html
२. http://vishvambharaa.blogspot.com
३. https://drspadmap.wordpress.com
४. https://vishwahindijan.blogspot.com